SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

भारत में क्षेत्रीय भाषाओं का इन्टरनेट पर बढ़ते प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन

सैय्यद काज़िम असग़र रिज़वी, पीएच–डी., डिपार्टमेंट ऑफ़ जर्नलिज़्म एंड मास कम्युनिकेशन
ख़्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तरप्रदेश,
सुम्बुल मुजतबा, पीएच–डी., डिपार्टमेंट ऑफ़ जर्नलिज़्म एंड मास कम्युनिकेशन
शिया पी. जी. कॉलेज, लखनऊ, उत्तरप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors
सैय्यद काज़िम असग़र रिज़वी, पीएच–डी.
सुम्बुल मुजतबा, पीएच–डी.
E-mail : kazimrizvi@kmclu.ac.in

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 24/03/2025
Revised on : 24/05/2025
Accepted on : 03/06/2025
Overall Similarity : 00% on 26/05/2025

शोध सार

भारत में इंटरनेट पर भारतीय भाषाओं की उपलब्धता तेज़ी से बढ़ रही है। आज इंटरनेट पर हिन्दी, मराठी, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलायलम, गुजराती, बंगाली जैसी कई भारतीय भाषाओं में इन्टरनेट पर जानकारियां उपलब्ध है जिनमें हिंदी भाषी लोगों की संख्या अन्य भारतीय भाषाओं की तुलना में काफ़ी अधिक है और दिन ब दिन बढ़ती जा रही है। भारत में पिछले दशक का अध्ययन करें तो यह पता चलता है कि इंटरनेट डेटा का उपयोग भारतीयों में तेजी से बढ़ रहा है। शहरी क्षेत्रों के साथ–साथ ग्रामीण क्षेत्रों में भी खपत में बढ़त आई है। इंटरनेट एंड मोबाइल एसोसिएशन ऑफ इंडिया (IAMAI) और कांटर (KANTAR) की एक संयुक्त रिपोर्ट के अनुसार, भारत में 2025 के अन्त तक इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या 900 मिलियन से अधिक हो जाएगी, जिसमें देश के ग्रामीण भागों से आने वाले उपयोगकर्ताओं की संख्या बढ़ती जाएगी साथ ही साथ यह भी जानने की बात है कि शहरी इलाकों में लोग इंग्लिश या ज्यादा भारतीय भाषाओं में इंटरनेट का इस्तेमाल माध्यम के रूप में कर रहे हैं। इन भाषाओं में तमिल, तेलुगु और मलयालम जैसी भाषाएं शामिल हैं।

मुख्य शब्द

इन्टनेट, डिजिटल मार्केटिंग, सोशल मीडिया, आर्टिफीशियल इंटेलीजेंस, वर्चुअल रियलिटी.

प्रस्तावना

वैश्विक स्तर पर वेबसाइट से लेकर सोशल मीडिया तक और डिजिटल मार्केटिंग से लेकर आर्टिफीशियल इंटेलीजेंस (AI) तक संचार के लिए अंग्रेजी भाषा का उपयोग किया जाता रहा है, परन्तु अब स्थितियां बदल

रही है। कई देश डिजिटल ज्ञान को अपने देश में और अधिक प्रचलित करने के लिए अपनी देश की स्वदेशी भाषा का डिजिटलीकरण करने पर ज़ोर दे रहें है।

अगर विगत वर्ष www.isocfoundation.org (W3Techs) द्वारा आंकड़ो को जारी किया गया, उसके अनुसार, इंटरनेट पर सबसे अधिक उपयोग अंग्रेजी भाषा का हो रहा है, जो सभी वेबसाइटों का 55 प्रतिशत हिस्सा है। 5 प्रतिशत के साथ स्पेनिश दूसरे स्थान पर है, उसके बाद 4.9 प्रतिशत के साथ रूसी है। (www.isocfoundation.org 2023)।

यहाँ इंटरनेट पर इस्तेमाल की जाने वाली शीर्ष 12 भाषाओं की एक तालिका इस प्रकार हैः

क्रम संख्या	भाषा	वेबसाइटों का प्रतिशत
01.	अंग्रेज़ी	55.0 प्रतिशत
02.	स्पैनिश	5.0 प्रतिशत
03.	रूसी	4.9 प्रतिशत
04.	जर्मन	4.3 प्रतिशत
05.	फ्रेंच	4.2 प्रतिशत
06.	जापानी	3.7 प्रतिशत
07.	पुर्तगाली	2.4 प्रतिशत
08.	तुर्की	2.3 प्रतिशत
09.	इतालवी	1.9 प्रतिशत
10.	फ़ारसी	1.8 प्रतिशत
11.	डच, फ्लेमिश	1.5 प्रतिशत
12.	चीनी	1.4 प्रतिशत

(स्रोतः https://www.isocfoundation.org/2023/05/what-are-the-most-used-languages-on-the-internet/)

उपरोक्त आंकड़ो के आधार पर यह ज्ञात होता है कि सोशल मीडिया पर प्रभाव सब से अधिक दिख रहा। इन्टरनेट मार्केटिंग उद्योग में उत्पाद के बारे में विज्ञापन फैलाने के लिए अपनी मूल भाषा का उपयोग तेज़ी से हो रहा है वहीं वेबसाइट अधिक से अधिक अपने कॉन्टेंट को भारतीय भाषाओं में परोसने की होड़ में लग गई हैं। इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के हवाले से पता चल है कि, इंटरनेट पर भारतीय भाषाओं के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार ने कई कार्य शुरू की हैं। इसमें सभी सरकारी वेबसाइटों को भारतीय भाषाओं में तैयार करना शामिल है। (navbharattimes.indiatimes.com 2020)

भारतीय भाषाओं में डोमेन नामों की ज़रूरत

आज से लगभग ढाई दशक पहले मिस्र की राजधानी काहिरा में Internet Corporation for Assigned Names & Numbers (ICANN) विषय पर आयोजित संगोष्ठी ने अंग्रेज़ी के अतिरिक्त भाषाई डोमेन नामों की ज़रूरत की ओर सबका ध्यान आकर्षित किया जिससे प्रभावित हो कर ICANN us International Domain Names (IDNs) का चलन शुरू हुआ। आज भारत में ICAAN द्वारा 22 अनुसूचित भाषाओं में डोमेन नेम रखने में सहायता कर रहा है। अगर हम इतिहास की ओर देखे तो पते है कि, 2014 में भारत सरकार के प्रयासों से देवनागरी लिपि और कोंकणी, मराठी समेत आठ भारतीय भाषाएं में 'भारत' के नाम से डोमेन नेम लिखना आरम्भ हुआ था। ठीक अगले साल भारत के नेशनल इंटरनेट एक्सचेंज ने बांग्ला, मणिपुरी, उर्दू, पंजाबी, तेलुगू, तमिल और गुजराती जैसी भारतीय भाषाओं में भी International Domain Names (IDN) की सेवा देने की शुरुआत हो गई।

स्मार्टफोन में भारतीय भाषाओं के टेक्स्ट को सपोर्ट करने की सुविधा

भारत सरकार ने 2018 में एक आदेश दिया कि देश में मोबाइल फोन कंपनियों को स्मार्टफोन और फ़ीचरफोन

में भारतीय भाषाओँ के टेक्स्ट को सपोर्ट करने की तकनीक उपलब्ध करनी होगी। इससे भारत में मोबाइल द्वारा इंटरनेट के इस्तेमाल पर अधिक प्रभाव पड़ा और भारतीय भाषाओं की सूचना सामग्री और सेवाओं के वितरण में उल्लेखनीय गति प्रदान की। अगर गूगल–KPMG की इस रिपोर्ट के आधार पर देखे तो इसके बाद से भारत में इंटरनेट के यूज़र्स के बीच भारतीय भाषाओं में सूचनाओं और सेवाओं को प्राप्त करने की संख्या बढ़ गई है जिससे अधिकतर लोग अपनी भाषा में इंटरनेट उपयोग करने को वरीयता देने लगे। आज भारत में भाषाओं में डिस्प्ले सपोर्ट अनिवार्य होने से स्थानीय भाषाओं में इंटरनेट की उपलब्धता करोड़ों भारतीयों के लिए एक वरदान से कम नहीं है। इस कारण से ई–कॉमर्स की बड़ी कंपनियां जैसे कि फ्लिपकार्ट और अमेज़न ने क्षेत्रीय भाषाओं में अपनी वेबसाइटें लॉन्च की हैं और फ़ेसबुक, व्हाट्सऐप जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म भी कई भारतीय भाषाओं को सपोर्ट करते हैं। (Sarma और Jaybhaye 2024)

भारतीय वाणिज्य विभाग की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में इन्टरनेट पर डिजिटल मार्केटिंग के लिए निवेशों की आवश्यकता जो 2025 तक 50–60 बिलियन डॉलर हो जाएगी। इस संख्या से साफ़ है कि भारत में डिजिटल मार्केटिंग का भविष्य सुनहरा है और डिजिटल मार्केटिंग के सन्दर्भ में यह भारत को विश्व के अग्रिम देशों की पंक्ति में खड़ा करने में मदद करेगा। (Mishra 2023) ऐसे में अगर इन्टरनेट पर क्षेत्रीय भारतीय भाषाओं का माध्यम भाषा के रूप में उपयोग अधिक से अधिक होता है तो डिजिटल मार्केट का विस्तार भारतीय समाज के अंतिम छोर तक होना संभव है।

इंटरनेट पर क्षेत्रीय भारतीय भाषाओं के यूजर्स

क्षेत्रीय भाषाओं का माध्यम के रूप में इन्टरनेट पर न होना, इन्टरनेट के विकास के लिए एक बड़ी अड़चन साबित हो रहा था। इस समस्या के तरफ़ ध्यान देते हुए, गूगल ही वह पहली कंपनी थी, जिसने अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में इंटरनेट को देने की पहल की। गूगल ने यूनिकोड कन्सोर्टियम नामक संस्था की सहायता से एक यूनिक कम्प्यूटर कोड तैयार किया। इससे शुरुआत में ही दुनिया की 32 भाषाएं शामिल हो गयीं जिसमें हिन्दी भी शामिल थी। मतलब अब इंटरनेट पर हिन्दी को उसी तरह लिखा जा सकता था जैसे अंग्रेजी को (Tiwari 2022)।

एक अनुमान है कि इसी साल, भारत में वर्ष 2025 के दौरान इंटरनेट यूजर की तादात 90 करोड़ के संख्या को छु सकती है। आई.ए.एम.ए.आई (Internet and Mobile Association of India) और कैंटा की रिपोर्ट के अनुसार, 2024 में इंटरनेट यूजर्स की संख्या 88.6 करोड़ तक पहुंच गई थी। इसमें हर साल 8 प्रतिशत की वृद्धि भी देखी जा रही है। इन्टरनेट के उपयोग के सन्दर्भ में सबसे ज़्यादा वृद्धि ग्रामीण इलाक़ो में दखी गई है। (Desk 2025) भास्कर डॉट कॉम की एक रिपोर्ट के अनुसार, इसका कारण यह है कि, देश की कुल इंटरनेट उपभोगताओं की संख्या का 55 प्रतिशत हिस्सा (48.8 करोड़) भारतीय गांवों से आता है। शहरों में इंग्लिश के समान्तर अब भारतीय भाषाओं में विशेषकर, हिंदी, मराठी, तमिल, गुजराती, तेलुगु, और बंगाली भाषा का अधिक उपयोग किया जा रहा है। रिपोर्ट से यह स्पष्ट होता है कि इन्टरनेट पर जब से क्षेत्रीय भारतीय भाषाओं को भाषाई माध्यम स्रोत के रूप में उपयोग किया जा रहा तभी से भारत में इंटरनेट उपयोग में वृद्धि का अहम कारण माना गया है। (News 2025)

पिछले कुछ सालों से भारत सरकार भी गूगल के प्रयासों के समान्तर, भारतीय भाषाओं को इन्टरनेट पर उपलब्ध करनें के प्रयास में लगी हुए है, इस ओर भारत सरकार की भी विशेष नज़र है। इस बात को 2020 में इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय में सचिव रहे, अजय प्रकाश साहनी, जो उद्योग मंडल फिक्की के 'भाषांतर' नामक सेमिनार के तीसरे संस्करण को संबोधित कर रहे थे। उनका कहना था कि इंटरनेट पर भारतीय भाषाओं के उपयोग को बढ़ाने के लिए सरकार ने कई योजनायें शुरू की हैं। इसमें सभी गवर्नमेंट वेबसाइटों की भाषा को भारतीय भाषाओं में तैयार कराना शामिल है, जो इस ओर एक बड़ा क़दम है। (NBT 2020)

भारतीय की क्षेत्रीय भाषाओं का इन्टरनेट पर बढ़ता चलन

अगर बिंदुवार देखा जाए तो हमें जागरण डॉट कॉम पर 28 फरवरी, 2024 को एक रिपोर्ट इस बात के साक्ष्य प्राप्त होते है जो इस बात को बताते है कि, भारतीय भाषाओं में लोग प्रमुखता से क्या–क्या इंटरनेट पर सर्च करते

हैं और क्या सर्च करते है जिनको इस प्रकार देखा जा सकता है:

- भारत के विभिन्न क्षेत्रों में भारतीय भाषाओं में इंटरनेट इस्तेमाल करने वाले लोगों में से 84 प्रतिशत लोग वीडियो देखने के लिए इंटरनेट का इस्तेमाल कर रहे हैं।
- 73 प्रतिशत लोग इन्टरनेट यूजर अपनी क्षेत्रीय भारतीय भाषाओं में गाना सुनने के लिए इंटरनेट का इस्तेमाल कर रहे हैं।
- इसके अतिरिक्त 34 प्रतिशत लोग इन्टरनेट के माध्यम से बातचीत करते है जिसमें टेक्स्ट, ऑडियो और वीडियो कॉल शामिल है।
- 33 प्रतिशत लोग क्षेत्रीय भारतीय भाषाओं में सोशल मीडिया का उपयोग करते हैं।
- क्षेत्रीय भारतीय भाषाओं में ऑनलाइन शॉपिंग के लिए 24 प्रतिशत लोग इंटरनेट का इस्तेमाल करते हैं।
- 17 प्रतिशत लोग ऑनलाइन सर्च में क्षेत्रीय भारतीय भाषाओं में का उपयोग करते हैं। (Pandey 2024)

आज कल बड़े पैमाने पर भारतीय युवा इंटरनेट पर भारतीय भाषाओँ में कंटेंट अपलोड कर रहे हैं जिसमें इंटरनेट पर हिंदी और अन्य भाषाओं का इस्तेमाल करने वाले लोगों की संख्या दिन रात बढ़ती जा रही है। यूट्यूब, फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर तेजी से भारतीय भाषाओं और हिंदी का उपयोग लोग कर रहें है। इस सफलता के पीछे देखा जाये तो, यूनिकोड जैसी सुविधा ने भारतीय भाषाओँ को वेबसाइट, सोशल मीडिया और वेब पोर्टल से जोड़ा है जिसका परिणाम यह देखा है कि, समाज का वह वर्ग जो सिर्फ अपनी क्षेत्रीय भाषा का ज्ञान रखता था वह व्यक्ति भी इन्टरनेट से जोड़ गया है। वर्तमान में बहुराष्ट्रीय कंपनियां भी अपने विज्ञापनों में हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं का उपयोग करें कर रहीं हैं और ऐसा करना इनके लिए ज़रूरी हो गया है, क्योंकि उन्हें यह बात अच्छे से पता है कि बिना हिंदी और भारतीय भाषाओँ के, वर्ल्ड वाइड वेब में बने रहना संभव नहीं है, भारत में एक रिपोर्ट के अनुसार 33 प्रतिशत लोग, हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओँ का उपयोग इन्टनेट पर कर रहें है। अगर हम आंकड़े उठा कर देखे तो यह स्पष्ट होता है कि अब इन्टरनेट संचार माध्यम के रूप में इंग्लिश भाषा के साथ–साथ हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओँ को भी प्रमुखता दे रहा है। इंटरनेट एंड मोबाइल एसोसिएशन ऑफ इंडिया (IAMAI) और कंटर (KANTAR) द्वारा साझा रूप से तैयार की गई 'इंटरनेट इन इंडिया रिपोर्ट 2024' में यह कहा गया है कि, इंटरनेट इस्तेमाल के सन्दर्भ में ग्रामीण भारत सबसे आगे है जिनमें हिंदी, तमिल, तेलुगु और मलयालम सबसे लोकप्रिय बनकर सामने आई हैं। शहरी इंटरनेट उपयोगकर्ताओं में से आधे से अधिक (57 प्रतिशत) क्षेत्रीय भारतीय भाषाओं में सामग्री का उपभोग करना पसंद करते हैं जो विभिन्न प्लेटफार्मों पर स्थानीय भाषा की सामग्री की बढ़ती मांग को दर्शाता है। (Kumar 2025)

भारत में इन्टरनेट पर उपयोग होने वाली भारतीय भाषाएँ (2024)

क्र सं	भारत में इन्टरनेट पर उपयोग होने वाली भाषाएँ (2024)	आँकड़े प्रतिशत में
01	इंग्लिश	43 प्रतिशत
02	हिंदी	24 प्रतिशत
03	मराठी	3 प्रतिशत
04	तमिल	6 प्रतिशत
05	गुजरती	3 प्रतिशत
06	मलयालम	3 प्रतिशत
07	कन्नड़	2 प्रतिशत
08	बंगाली	2 प्रतिशत
09	तेलगु	4 प्रतिशत
10	अन्य	10 प्रतिशत

(स्रोत:https://www.business&standard.com@/ndia-news/use-of-indian-languages-key-for-increasing-internet-access-in-india-report-124031000395-1.html (January 18, 2025))

हिंदी और क्षेत्रीय भारतीय भाषाएँ और डिजिटल शॉपिंग

भारत की प्रमुख और आधिकारिक भाषा हिंदी है। यह ज्यादातर भारतीये क्षेत्रों में बोली जाती है, जबकि बाकी आबादी चाहे वे किसी भी राज्य की हों, अपनी क्षेत्रीय भाषा में बोलना पसंद करती है। क्षेत्रीय भाषा आम तौर पर किसी व्यक्ति के जन्म स्थान से जुड़ी भाषा होती है जो, व्यक्तियों के बीच संचार के लिए उपयोगी होती है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343(1) के अंतर्गत देवनागरी लिपि में हिंदी को संघ की राजभाषा घोषित किया गया है साथ ही संविधान के अनुच्छेद 351 में संघ को यह कार्य सौंपा गया है कि हिंदी भाषा का प्रसार क्षेत्र बढ़ाए, उसका विकास करें, जिससे वह भारत की संस्कृति के सभी आयामों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके। (Samiti 2025)

डिजिटल दशक में यह बहुत ज़्यादा देखा जा रहा है कि ऑनलाइन शॉपिंग, संवाद करने, वीडियो देखने, संगीत सुनने, ई–पुस्तकें पढ़ने, ई–समाचार पत्र और ऑनलाइन शॉपिंग करने के लिए इंटरनेट का उपयोग, एक सामान्य बात होती जा रही है। ऑनलाइन शॉपिंग ऐप्स किसी को भी दुनिया के किसी भी हिस्से से उत्पाद खरीदने की सुविधा देते हैं। यह ऑनलाइन शॉपिंग ऐप्स अपनी पालिसी के अनुसार, मुफ़्त शिपिंग डिलीवरी की सुविधा भी देते हैं। आज हम देखे तो पाते है कि विभिन्न प्रकार कि ऐसी वेबसाइट है जो अलग–अलग क्षत्रों में ज्ञानवर्धक जानकारियां समाज में उपलब्ध करा रही है जिससे यह पता चलता है कि जो लोग किन्हीं कारणों से अपने मनपसंद सामग्री को नहीं प्राप्त करे पा रहे थे, इंटरनेट की सुविधा के कारण उनको पाना सरल हो गया है। यही कारण है की आजकल ऑनलाइन भुगतान का तरीका तीव्र गति से बढ़ता जा रहा है साथ ही साथ यह भी देखा जा रहा है कि, डिजटल भुगतान और सरकारी कार्यों के लिए हिंदी भाषा का इस्तेमाल भारत में एक आदत बन गई है जिसका परिणाम यह हुआ था कि साल 2016 में 2.2 करोड़ लोगों ने डिजटल भुगतान के लिए हिंदी भाषा का उपयोग किया। पांच सालों बाद यह संख्या वर्ष 2021 में 8.1 करोड़ की संख्या को पार कर गई। इसी तरफ वर्ष 2016 में 2.4 करोड़ लोग सरकारी कामकाज के लिए हिंदी भाषा का उपयोग कर रहे थे, जो पांच सालों बाद 2021 में बढ़कर 14.4 करोड़ लोग सरकारी कामकाज के लिए हिंदी भाषा का प्रयोग करने लगे थे।

प्रमुख ई–कॉमर्स प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध प्रमुख भारतीय भाषाएँ

Amazon India हिंदी, मराठी, बंगाली, तेलुगु, तमिल, मलयालम और कन्नड़ भाषाओं में सपोर्ट प्रदान करता है।

Flipkart, Myntra और Make My Trip हिंदी सहित कई भारतीय भाषाओं में सपोर्ट प्रदान करता है।

अमेज़ॉन ने बाजार शोधकर्ताओं की मदद से भारत में लोगों का सर्वेक्षण किया और ऑनलाइन शॉपिंग ऐप में भाषा परिवर्तन के परिचय के बारे में निष्कर्ष निकाला। प्रारंभ में यह अमेज़ॉन था जिसने लगभग 100 मिलियन ग्राहकों को संबोधित करते हुए हिंदी भाषा में शॉपिंग ऐप लॉन्च किया था, उसके बाद फ्लिप कार्ट, जाबॉन्ग और पेटीएम जैसे अन्य ऑनलाइन शॉपिंग ऐप आए। अमेज़ॉन ने भारत के महानगरीय शहरों से परे अपने उपभोक्ताओं का विस्तार करने के लिए 4 सितंबर 2018 को अपना हिंदी भाषा शॉपिंग ऐप लॉन्च किया। अमेज़ॉन भारत में ऑनलाइन शॉपिंग ऐप में भाषा की बाधा को तोड़ने वाला पहला ऑनलाइन शॉपिंग ऐप बन गया था। स्नैप डील ने स्थानीय–भाषा संस्करण ऐप पेश किया लेकिन यह ग्राहकों को आकर्षित नहीं कर सका और इसे छोड़ दिया गया। अमेज़ॉन उन लोगों के लिए अन्य दक्षिण भारतीय भाषाओं में लॉन्च करने की योजना बना रहा है जो हिंदी भाषी क्षेत्रों में नहीं हैं। (Verma और Ray 2019)

आज देखा जाए तो आपकी भाषा में शॉपिंग करने की आजादी कुछ ही कंपनियां देती हैं। OLX और Quikr, दोनों कंपनियों की अन्य भाषाओँ के साथ–साथ हिंदी में भी वेबसाइट है। Quikr पर सात भारतीय भाषाओं में एक्सेस मिलता है। बहुत ही जल्दी Flipkart, Snapdeal और Jabong जल्द ही क्षेत्रीय भाषाओं में साइट लॉन्च करेंगे। Make MyTrip ने भी अपने कस्टमर्स के लिए हिंदी वेबसाइट की शुरुआत की थी। आज की तारीख में कंपनी कई मुश्किलों के बावजूद हिंदी के अलावा अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में सपोर्ट मुहैया कराने की स्थिति में है। (साठे 2016)

साहित्य पुरावलोकन

शोधपत्र में साहित्य पुनरावलोकन का महत्वपूर्ण स्थान होता है, क्योंकि यह शोधकर्ता को पूर्व में किये गए शोध कार्यों से अवगत कराता है, शोध के विभिन्न आयामों को सटीक ढंग से अर्थ तथा परिभाषित करने में सहायता करता है, और भविष्य में किये जाने वाले शोध कार्य के लिए एक आधार प्रदान करता है साथ ही साथ, यह शोधकर्ता को पहले से किए गए कार्यों की तुलना करने, विभिन्नता की पहचान करने और अपने शोध कार्य को आगे बढ़ाने में सार्थक मार्ग प्रशस्त करता है।

प्रस्तुत शोधपत्र "इन्टरनेट पर क्षेत्रीय भारतीय भाषाओं के बढ़ते प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन" के सन्दर्भ में साहित्य पुनरावलोकन करने पर वेबसाइट, शोधपत्र और पुस्तकों में कई तथ्यात्मक लेख और आकंड़े प्राप्त हुए। जिस के आधार पर इस शोधपत्र की रूप रेखा रूप दिया गया।

- बिज़नस स्टैण्डर्ड डॉट कॉम पर मुंबई से दिंनाक 12, मार्च 2024, को शिवानी शिंदे और अजिंक्य कवले ने अपने रिपोर्ट "भारत में इंटरनेट की पहुंच बढ़ाने के लिए भारतीय भाषाओं का उपयोग महत्वपूर्ण रिपोर्ट" में इस बात पर विशेष ध्यान देते हुए लिखा है कि किस प्रकार से भारतीय भाषाओं का उपयोग करके इंटरनेट पर वीडियो देखना, उसके बाद संगीत सुनना, संचार, सोशल नेटवर्किंग, ऑनलाइन शॉपिंग और अंत में ऑनलाइन सर्च आदि का चलन बढ़ता जा रहा है। आगे बताते है कि भारतीय भाषाओं के बढ़ते उपयोग को बढ़ावा देने वाले सबसे महत्वपूर्ण उपकरणों में से एक है वॉयस सर्च भी है।
- navbharattimes.indiatimes.com पर दिल्ली से दिनांक 01, दिसम्बर, 2020, को प्रकाशित रिपोर्ट "इंटरनेट पर भारतीय भाषाओं का इस्तेमाल बढ़ाने के लिए सरकार उठा रही कई कदम" नमक रिपोर्ट मे इस बात अक उल्लेख किया गया है कि, किस तरह से सरकारी वेबसाइटों को भारतीय भाषाओं में उपलब्ध कराया जा रहा है। सरकार ने उद्योग जगत से ऐसे उपकरण और तकनीकें विकसित करने को कहा है, जो स्थानीय भाषाओं में उपलब्ध डिजिटल सामग्री की उपलब्धता बढ़ाने में सार्थक हो साथ ही साथ इस रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि भारतीय कंपनियां को इंटरनेट पर भारतीय भाषाओं के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए अभियान चलाने को कहा है।
- माइक्रोसॉफ्ट फीचर वेबसाइट पर दिंनाक 10, जनवरी 2018, को बालेन्दु शर्मा ने अपने रिपोर्ट "डिजिटल ट्रांसफॉरमेशन की प्रक्रिया में साथ हैं भारतीय भाषाएँ" में इस बात पर विशेष ध्यान देते हुए लिखा है कि भारतीय भाषाओं समर्थन के बिना 'डिजिटल ट्रांसफॉरमेशन' के उद्देश्य को प्राप्त नहीं किया जा सकता, क्योंकि जबतक क्षेत्रीय भाषा में इन्टरनेट की एक्सेस नहीं उपलब्ध होगी तबतक, निजी, कारोबारी तथा प्रशासनिक प्रक्रियाओं को सरल, सुगम, सुसंगठित, नहीं बनाया जा सकता। इसके लिए डिजिटल–कार्य–संस्कृति को प्रोत्साहित करना होगा।

शोध का उद्देश्य

- इन्टरनेट पर आ रहे भाषाई बदलावों का गहनता से अध्ययन करना।
- भारत में क्षेत्रीय भाषाओँ के रूप में इन्टरनेट पर हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओँ का अध्ययन करना।
- इन्टरनेट पर संचार माध्यम के रूप अंग्रेज़ी की तुलना में हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओँ की वस्तुस्थिति की जानकारी प्राप्त करना।

शोध की प्रविधि

प्रस्तुत शोधपत्र में वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक शोध प्रारूप का प्रयोग के साथ–साथ अंर्तवस्तु विश्लेषण विधि का भी इस्तेमाल किया गया है, जिसके अंर्तगत अलग–अलग डिजिटल मीडिया सामग्री का गहन अध्ययन और द्वितीयक आंकड़ों का संकलन कर उनका विश्लेषण किया गया साथ ही, शोध में अवलोकन पद्धति का सहारा लिया गया, जिसमें शोधपत्र और डिजिटल मीडिया प्लेटफॉर्म की सामग्री को व्यवस्थित ढगं से देखा गया और उसकी

प्रासंगिकता का मूल्यांकन किया गया। वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक शोध प्रारूप द्वारा किसी स्थिती, समूह, या व्यक्ति विशेष की विशेषताएं जानने के लिए वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक शोध प्रारूप को अपनाया जाता है। इसका लक्ष्य वह जानकारी प्राप्त करना है जो अभी तक अज्ञात थी। (दयाल 2006)

शोध कार्य का महत्त्व

- **इन्टरनेट पर भाषाई विविधता की समझ का विकास करना:** यह अध्ययन भारतीय भाषाओं की विविधता और उनके ऑनलाइन उपयोग को समझने में मदद करेगा।
- **डिजिटल पहुंच और समावेशन का एक मंच पर दिखाना का प्रयास:** यह अध्ययन डिजिटल क्षेत्र में क्षेत्रीय भाषाओं के बढ़ते प्रभाव को समझने और उनके माध्यम से अधिक लोगों तक पहुंचने के तरीकों को खोजने में मदद करेगा।
- **भारतीय भाषाई नीति और योजना का दर्शाना:** यह अध्ययन भारतीय भाषाई नीति और योजना के लिए महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकता है, जिससे क्षेत्रीय भाषाओं को बढ़ावा देने और संरक्षित करने के प्रयासों में मदद मिल सकती है।
- **डिजिटल सामग्री निर्माण:** यह अध्ययन क्षेत्रीय भाषाओं में उच्च–गुणवत्ता वाली डिजिटल सामग्री बनाने के लिए मार्गदर्शन प्रदान कर सकता है, जिससे अधिक लोगों को ऑनलाइन संसाधनों तक पहुंचने में मदद मिल सकती है।

शोध की सीमाएं

इन्टरनेट पर डिजिटल संचार का क्षेत्र आज बहुत ही व्यापक हो गया है, जिसने वैश्विक स्वरूप ले लिया। ऐसे में इन्टरनेट पर संचार के हर पहलू को लेकर शोध कार्य में समाहित करना जटिल बन गया है। पिछले कुछ दशकों में जहाँ इन्टरनेट की संचार भाषा एक मात्र इंग्लिश हुआ करती थे, परन्तु अब प्रस्थितियाँ समय के साथ–साथ बदलती जा रही है। भारत में जहाँ आकंड़े यह बताते कि भारत में इन्टरनेट उपभोगताओं की संख्या लगभग 900 मिलियन के आस–पास है तथा भारत एक बहु–भाषी देश है, जहाँ कई प्रान्तों में अलग–अलग भाषा बोली जाती है जो यह दर्शाता है कि इन्टरनेट पर माध्यम के रूप भारतीय भाषाओं के आगमन से इन्टरनेट पर भारतीयों का आगमन को तेज़ी से बढ़ाया है। ऐसे में हिंदी भाषा के साथ–साथ कुछ एक क्षेत्रीय भारतीय भाषाओँ का अध्ययन के अलावा अन्य समस्त भारतीय भाषाओँ का अवलोकन संभव नहीं है, तथ्य संकलन के लिए प्रमुख रूप से द्वितीयक आंकड़ों पर निर्भर हो कर ही शोध कार्य पूर्ण गया है।

निष्कर्ष

इंटरनेट पर क्षेत्रीय भारतीय भाषाओं का प्रभाव लगातार बढ़ रहा है। यह वृद्धि इंटरनेट की बढ़ती पहुंच, डिजिटल साक्षरता में वृद्धि, भारतीय भाषाओं में कंटेंट की उपलब्धता में वृद्धि और सरकारी पहलों के कारण है। क्षेत्रीय भाषाओं में कंटेंट की उपलब्धता में वृद्धि से लोगों को अपनी मातृभाषा में जानकारी तक पहुंचने में मदद मिलती है, जिससे वे शिक्षा, रोजगार और सांस्कृतिक पहचान के क्षेत्रों में लाभान्वित हो सकते हैं।

सन्दर्भ सूची

1. Hindi News, *bhaskar.com*. 18 January 2025. https://www.bhaskar.com/business/news/98-people-in-the-country-use-the-internet-in-their-local-language-134312558.html#:~:text=Their%20Local%20Language-,%E0%A4%A6%E0%A5%87%E0%A4%B6%20%E0%A4%AE%E0%A5%87%E0 %A4%82%2098%25%20%E0%A4%B2%E0%A5%8B%E0%A4%97%20%E0%, Accessed on 12/03/2025.

2. Kumar, Rajesh (2025) *The Pioneer.* 17 January 2025. https://www.dailypioneer.com/2025/pioneer-exclusive/indic-languages-are-driving-india—s-internet-growth.html, Accessed on 13/03/2025.

3. Mishra, Pushpendra (2023) *Education.* 25 March 2023. https://www.amarujala.com/education/career-plus/digital-marketing-the-future-of-digital-marketing-in-india-know-how-your-career-will-be-made-in-it-safalta-2023-03-25#google_vignette, Accessed on 12/03/2025.

4. navbharattimes.indiatimes.com, Hindi News. 01 December 2020. https://navbharattimes.india times.com/business/business-news/government-is-taking-many-steps-to-increase-the-use-of-indian-languages-on-the-internet/articleshow/79517525.cms, Accessed on 13/02/2025.

5. Navodaya Vidyalaya Samiti, Miscellaneous. 17 january 2025. https://navodaya.gov.in/nvs/hi/Miscellaneous/Official-Language-Hindi-Rajbhasha/#:~:text=%E0%A4%AD%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A4%A4%E0%A5%80%E0%A4%AF%20%E0%A4%B8%E0%A4%82%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%A7%E0%A4%BE%E0%A4%A8%20%E0%A4%95%E0%A5%87%20%E0%A4%85%E0%A4%A8%E0%A., Accessed on 10/02/2025.

6. NBT. "इंटरनेट पर भारतीय भाषाओं का इस्तेमाल बढ़ाने के लिए सरकार उठा रही कई कदम" *navbharattimes.indiatimes.com*, 2020: https://navbharattimes.indiatimes.com/business/business-news/government-is-taking-many-steps-to-increase-the-use-of-indian-languages-on-the-internet/articleshow/79517525.cms, Accessed on 03/03, 2025.

7. Pandey, Ankita (2024) Tech-News. 28 February 2024. https://www.jagran.com/technology/tech-news-internet-in-india-people-using-native-language-more-than-english-for-searching-check-the-details-here-23663662.html, Accessed on 12/02/2025.

8. Sarma, Anirban and Jaybhaye, Shrushti (2024) भाषाई विविधता वाले 'सूचना समाज' की ओर बढ़ते कदम!, May 2024, https://www.orfonline.org/hindi/expert-speak/towards-linguistically-diverse-information-societies, Accessed on 11/03/2025.

9. Sathe, Gopal (2016) hindi.gadgets360.com. 08 April 2016. https://hindi.gadgets360.com/internet/indian-languages-finally-making-their-presence-felt-in-e-commerce-features-772578, Asseced on 12/03/2025.

10. Tech Desk, News. (17 January 2025) https://indianexpress.com/article/technology/tech-news-technology/indias-internet-users-to-surpass-900-million-in-2025-regional-content-driving-growth-iamai-kantar-report-9781881/, Accessed on 15/02/2025.

11. Tiwari, Sanjay (2022) Opinion. 15 September 2022. https://hindi.oneindia.com/opinion/hindi-on-the-internet-world-of-technology-and-its-development-barriers-711265.html, Accessed on 02/02/2025.

12. Verma, Anil and Ray, Samrat (2019) "The case of amazons E-commerce digital strategy in India." *World Journal of Advanced Research and Reviews*, 19 January 2019: 075–079.

13. www.isocfoundation.org, *Internet Society Foundation.* 15 May 2023. https://www.isocfoundation.org/2023/05/what-are-the-most-used-languages-on-the-internet/, , Accessed on 12/03/2025 .

14. दयाल, मनोज (2006) *मीडिया शोध,* हरियाणा साहित्य आकादमी, पंचकुला।

****